विशङ्कमानो भवत: पराभवं नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिन: ।

दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधन: ॥७॥

अन्वय-

सुयोधन: नृपासनस्थ: अपि वनाधिवासिन: भवत: पराभवं विशङ्कमान: दुरोदरछद्मजिताम् जगतीम् नयेन जेतुम् समीहते ।।७।।

अर्थ –

राज सिंहासन पर बैठा हुआ भी दुर्योधन (राज्याधिकार से च्युत) वन में निवास करने वाले आप से अपनी पराजय की आशंका रखता है । अतएव जुए द्वारा कपट से जीती हुई पृथ्वी को (अब) वह न्यायपूर्ण शासन द्वारा अपन वश में करने की इच्छा करता है ॥७॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि यद्यपि दुर्योधन सर्वसाधनसम्पन्न है और आपके पास कोई साधन नहीं है, फिर भी आप से वह सदा डरता रहता है कि कहीं आपके न्याय-शासन से प्रसन्न जनता आपका साथ न दे दे और आप उसे राजगद्दी से न उतार दें। इसलिये वह यद्यपि जुआ में समूचे राजपाट को आपसे जीत चुका है, फिर भी प्रजा का हृदय जीतने के लिए न्यायपरायणता में तत्पर है । वह अपनी ओर से तनिक भी असावधान नहीं है, क्योंकि आप सब का वह वनवासी होने पर भी प्रजावल्लभ होने के कारण अपने से अधिक बलवान समझता है । अत: जनता को अपने प्रति आकृष्ट कर रहा है।

यहाँ पदार्थहेतुक काव्यलिंग अलंकार है।

तथाऽपि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।

समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद् वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः ।।८।।

अन्वय-

तथा जिह्मः अपि सः भवज्जिगीषया गुणसम्पदा शुभ्रं यशः तनोति। भूतिम् समुन्नयन् महात्मभिः समं विरोधः अपि अनार्यसङ्गमात् वरम् ॥८॥

अर्थ-

आप से सशंकित होकर भी वह कुटिल प्रकृति दुर्योधन आप को पराजित करने की अभिलाषा से दान-दाक्षिण्यादि सद्गुणो से अपने निर्मल यश का (उत्तरोत्तर) विस्तार कर रहा है क्योकि नीच लोगो के सम्पर्क से वैभव प्राप्त करने की अपेक्षा सज्जनो से विरोध प्राप्त करना भी अच्छा हो होता है ॥८॥

टिप्पणी-

सज्जनों का विरोध दुष्टों की सङ्गति से इसलिए अच्छा होता है कि सज्जनो के साथ विरोध करने से और कुछ नहीं तो उनकी देखा-देखी स्पर्द्धा में उनके गुणों की प्राप्ति के लिए चेष्टा करने की प्रेरणा तो होती ही है । जबकि दुष्टों की संगति तात्कालिक लाभ के साथ ही दुर्गति का कारण बनती है। क्योकि दुष्टों की सङ्गति से बुरे गुणों का अभ्यास बढ़ेगा, जो स्वयं दुर्गति के द्वार हैं।

इस लोक मे सामान्य से विशेष का समर्थन रूप अर्थान्तरन्यास अलंकार है, जो पदार्थहेतुक काव्यलिंग से अनुप्राणित है।